कृषि विज्ञान केन्द्र, रामगढ़ में 15 दिवसीय एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन प्रशिक्षण के 3 बैच का शुभारंभ हुआ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मांडू, रामगढ़ में 15 दिवसीय एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन प्रशिक्षण का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री जयंत सिन्हा, माननीय सांसाद, हजारीबाग द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। यह प्रशिक्षण 23 नवम्बर से 07 दिसम्बर 2020 तक चलने वाला है। इस प्रशिक्षण में रामगढ़ एवं हजारीबाग के 40 (पैक्स के अध्यक्ष/सदस्य एवं खाद/बीज विक्रेता) प्रशिक्षु भाग ले रहें हैं। प्रशिक्षण के शुभारंभ के अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि ने प्रशिक्षण में आए प्रशिक्षुओं को विज्ञान के बारे मे समझाते हुए कहा कि आज जो भी विकास हुए हैं उसमें विज्ञान का ही अहम योगदान है और यह प्रशिक्षण कृषि विज्ञान से संबंधित है जिसमें उर्वरक तथा उसके सही मात्रा में उपयोग करने कि जानकारी कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा साझा किया जायेगा जोकि फसल के पैदावार में बढ़ोत्तरी के साथ–साथ मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होगी तथा हमारे किसान भाईयों के आमदनी में बढ़ोतरी होगी। माननीय सांसाद महोदय ने इस कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण में आये सभी पैक्स सदस्य एवं खाद/बीज विक्रेताओं से सीधा संवाद कर उन्हें कृषि में फसल चक्र के साथ–साथ बकरी पालन पर बल देते हुए कहा कि बकरी को मिनी ए.टी.एम भी कहा जाता है जोकि आमदनी का एक बेहतर साधन हो सकता है। इसके पालन संबंधी जानकारी किसानों को अवश्य दें। उन्होंने सभी को इस प्रशिक्षण को जागरूकता के साथ करने तथा इससे प्राप्त जानकारी को किसानों के हित में उपयोग करने लिए कहा। केन्द्र के प्रभारी डॉ. दुष्यंत कुमार राघव ने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षुओं को उर्वरक एवं उर्वरक के उपयोग संबंधी तमाम जानकारी प्रदान कि जायेगी। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में झारखण्ड राज्य में अन्य राज्यों कि अपेक्षा 60–65 प्रतिशत कम उपयोग किया जाता है और आने वाले समय में उर्वरक का उपयोग अत्यधिक बढ़ने वाला है जिसका सीधा प्रभाव हमारी मिट्टी में हो रहा है। अभी के समय में किसान भाई उर्वरक जैसे – फॉसफोरस एवं नाईट्रोजन का सूक्ष्म उपयोग ही करते है तथा उत्पदान की आवश्यकता और मिट्टी के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए अन्य उर्वरक के उपयोग के लिए यह प्रशिक्षण बहुत ही लाभकारी सिद्ध होगा। इस प्रशिक्षण में सूक्ष्म पोषक तत्व एवं मिट्टी के उर्वरता प्रबंधन, जल प्रबंधन, परणीय छिड़काव एवं टपक सिंचाई प्रबंधन,

फर्टिलाईजर एक्ट, जैव उर्वरकों के भंडारण एवं उपयोग, जैविक खेती एवं रासायनिक पोषक तत्वों के उपयोग के बारे में बताया जायेगा। उर्वरक विक्रेता का प्रशिक्षित होना अतिआवश्यक है क्योंकि किसान फसल में उत्पादकता के लिए उर्वरक के लिए विक्रेता से सीधा संपर्क करते हैं प्रशिक्षित विक्रेता होने का लाभ तभी सिद्ध होगा जब वो किसान कि खेत की आवश्यकता अनुसार उचित उर्वक तथा मात्रा की सलाह देते हुए विक्रय करें। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ इन्द्रजीत के बताया कि इस प्रशिक्षण को उच्च स्तरीय ज्ञानवर्धक बनाने के लिए विषय विशेषज्ञ के रूप में विभिन्न जगहों से प्रशिक्षकों को बुलाया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान सांसद महोदय ने केन्द्र में पौधा रोपण कर प्रशिक्षण में आये सभी प्रशिक्षुओं साथ केन्द्र के प्रक्षेत्र का भ्रमण किया तथा केन्द्र में हो रहे शोध तथा प्रत्यक्षण के बारे में जानकारी ली। मौके पर केन्द्र के श्री सन्नी कुमार सन्नी आशिष बालमुचू एवं शशि कांत चौबे समेत अन्य लोग उपस्थित थे।